भारत की राष्ट्रपति,

श्रीमती द्रौपदी मुर्मु

का

नागरिक अ भनंदन समारोह के अवसर पर सम्बोधन

गुवाहाटी, 1**3** अक्तूबर, 2022

आदि-शक्ति मां कामाख्या के आशीर्वाद से सम्पन्न इस पावन भू म को मैं प्रणाम करती हूं।

भारत माता के परमवीर पुत्र , महानायक ला सत बड़फुकन की इस वीर-स्थली को मैं नमन करती हूं।

आज असम के आप सब भाई **-**बहनों-युवाओं ने अद्भुत उत्साह और स्नेह से परिपूर्ण स्वागत करके मेरे हृदय को छू लया है। आप सब के असाधारण स्नेह की याद मेरे मन-मस्तिष्क में सदा अं कत रहेगी। ऐसे अनुपम स्वागत के लए मैं आप सबको हार्दिक धन्यवाद देती हूं।

कल प्रातःकाल मुझे नीलाचल की प वत्र पहाड़ी पर स्थित अति प्राचीन कामाख्या आदि-शक्ति पीठ में जाकर देवी-दर्शन का परम सौभाग्य मलेगा। वहां मैं देशवा सयों की सर्वांगीण प्रगति और कल्याण के लए , वशेषकर हमारे युवाओं और बच्चों के उज्ज्वल भ वष्य के लए प्रार्थना करूंगी।

दे वयो और सज्जनो,

असम के निवा सयों में राष्ट्रीयता की भावना बहुत प्रबल रही है। परमवीर , ला सत बड़फुकन का ऐतिहा सक कथन आज भी असम के बच्चे-बच्चे को मालूम है। राष्ट्र की रक्षा को सर्वोपरि रखने का उनका आदर्श-वाक्य सभी देशवा सयों के लए प्रेरणा का उत्स है।

उन्होंने कहा था:

“देखोत-कोइ, मोमाइ डांगर न होइ”

अर्थात

‘देश से बढ़कर, मामा नहीं होता है’।

इसी वर्ष, महानायक ला सत बड़फुकन की **400**वीं जयंती मनाई गई है। मुझे बताया गया है क वर्ष **1999** में, नेशनल डफेंस एकेडमी, पुणे द्वारा ‘ला सत बड़फुकन स्वर्ण पदक पुरस्कार’ प्रदान करने की परंपरा शुरू की गई। वह पुरस्कार प्रतिवर्ष सर्वश्रेष्ठ **Cadet** को दिया जाता है।

मुझे यह भी बताया गया है क नेशनल डफेंस एकेडमी के परिसर में ला सत बड़फुकन की प्रतिमा भी स्था पत की गई है। इस प्रकार , भारत के बहादुर सैनिकों के लए ला सत बड़फुकन प्रेरणा-स्रोत बने हुए हैं।

बीसवीं सदी में असम की सांस्कृतिक वभूति , ज्योति प्रसाद अगरवाला जी ने भारत की संस्कृति की महानता का उद्घोष करते हुए एक अमर गीत की रचना की थी। उस गीत का मुखड़ा है:

‘मोरे भारतोरे, मोरे हपोनोरे, सरो हुन्दोर हंस्कृति’

अर्थात

मेरे भारत की, मेरे सपनों की संस्कृति चरसुंदर है।

राष्ट्रपति के रूप में असम की अपनी पहली यात्रा में गुवाहाटी आकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। गुवाहाटी नगर ब्रह्मपुत्र के आशीर्वाद से सं चत है। ब्रह्मपुत्र यानि लोहित के इस क्षेत्र में उस लोक प्रय अस मया प्रार्थना का स्मरण होना स्वाभा वक है,

जिसमें कहा गया है: श्री-लुइत, प्रोनाम कोरो।

इस प्रार्थना का भावार्थ यह है क ब्रह्मपुत्र को प्रणाम करके , व्यक्ति को गंगा तथा अन्य प वत्र नदियों सहित कई तीर्थ-स्थलों में पूजा करने का पुण्य प्राप्त हो जाता है।

इस यात्रा के द्‌वारा मुझे भारत की उन महान परम्पराओं और उपलब्धियों से जुड़ने का अवसर मल रहा है जिनके कारण भारत पूरे वश्व में अग्रणी रहा करता था। ह्वेनसांग और अलबरूनी के यात्रा वृत्तान्तों में प्रागज्योतिषपुर और कामरूप की समुन्नत संस्कृति का उल्लेख मलता है।

प्रकृति के प्रचुर वरदान से सम्पन्न असम राज्य का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक वैभव भी अत्यंत प्रभावशाली है। श्रीमंत शंकरदेव और माधवदेव जैसी असाधारण वभूतियों ने भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपरा को समृद्ध कया है तथा समाज को जोड़ने का काम कया है। इस क्षेत्र के बोडो समाज से बहुत कुछ सीखने लायक है। ज्योति प्रसाद अगरवाला , बिष्णु प्रसाद राभा तथा भूपेन हजारिका जैसी अद्भुत प्रतिभाओं ने भारतीय समाज और संस्कृति को अक्षय उपहार दिए हैं। ‘आजादी का अमृत महोत्सव ’ पूरे देश में मनाया जा रहा है। स्वाधीनता संग्राम और भारत के नवनिर्माण में अमूल्य योगदान देने वाले भारत-रत्न, लोक प्रय गोपीनाथ बोरदोलोई की स्मृति को सभी देशवा सयों की ओर से मैं सादर नमन करती हूं।

दे वयो और सज्जनो,

असम में भारत की भौगो लक , सामाजिक और सांस्कृतिक व वधता का इंद्रधनुषी रूप दिखाई देता है। असम का वकास पूरे देश के समग्र वकास के लए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हो रही है क **infrastructure** का तेजी से वकास करके असम की और पूर्वोत्तर क्षेत्र की सु वधाओं को व्यापक और अत्याधुनिक बनाया जा रहा है। इससे लोगों का जीवन सुगम हो रहा है तथा उद्यमों के वकास को नई गति प्राप्त हो रही है।

यह खुशी की बात है क एक बार फर असम के लोग नई ऊर्जा के साथ आधुनिक वकास के मार्ग पर तेजी के साथ आगे बढ़ रहे हैं। इस बदलाव के लए असम के राज्यपाल, प्रोफेसर जगदीश मुखी जी के कुशल मार्गदर्शन तथा मुख्यमंत्री, डॉक्टर हिमंत बिस्व सरमा जी के ऊर्जावान नेतृत्व की मैं सराहना करती हूं।

अपनी इस यात्रा के दौरान मैंने आज आधुनिक वकास से जुड़ी सु वधाओं तथा सेवाओं का उद्घाटन और शलान्यास कया। कल भी मुझे सामाजिक समावेश और आधुनिक **infrastructure** से जुड़ी परियोजनाओं का उद्घाटन तथा शलान्यास करने का अवसर मलेगा। मुझे यह जानकर प्रसन्नता होती है क असम सहित, पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों में सड़कों का तथा रेल सु वधाओं का तेज गति से वकास हो रहा है , **inland waterways** वक सत हो रहे हैं , छोटे-बड़े पुल बनाए जा रहे हैं तथा इस क्षेत्र की देश- वदेश के साथ **connectivity** बेहतर हो रही है। कुल मलाकर ये सभी प्रयास असम तथा पूरे भारत के सुदृढ़ भ वष्य के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ते हुए कदम हैं। मुझे पूरा वश्वास है क असम राज्य और यहां के निवासी देश के स्व र्णम भ वष्य के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान देते रहेंगे।

भारत सरकार ने राष्ट्रीय स्तर पर देश के पूर्वी और पूर्वोत्तर क्षेत्र के वकास को वशेष प्राथ मकता दी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर केंद्र सरकार ने **Act East**

Policy अपनाई है। इस प्रकार, असम सहित, पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों की वशेष भौगो लक स्थिति का उपयोग करते हुए भारत को द क्षण -पूर्व ए शया के साथ जोड़ा जा रहा है। इस बदलाव से असम के वकास को अंतरराष्ट्रीय आयाम भी प्राप्त हो रहा है।

असम में पर्यटन उद्योग के वकास की असीम संभावनाएं हैं। 'मानस' और 'काजीरंगा' जैसे मनमोहक स्थलों के कारण असम पर्यटकों को आक षत करता रहा है। वर्तमान केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा पर्यटन के वकास के लए और अच्छा **eco-system** तैयार कया रहा है। इन प्रयासों का परिणाम निकट भ वष्य में ही और बड़े पैमाने पर दिखाई देने लगेगा। इस परिवर्तन से यहां के युवाओं के लए रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे।

असम के बागानों की चाय देश- वदेश में बहुत पसंद की जाती है। उन बागानों में काम करने वाले परिवारों का कल्याण हमारी प्राथ मकता है। मुझे आप सबसे यह साझा करते हुए प्रसन्नता हो रही है क कल मुझे **Tea Garden Areas** में **100 Model Secondary Schools** का शलान्यास करने का अवसर प्राप्त होगा। इस प्रयास की मैं सराहना करती हूं।

दे वयो और सज्जनो,

इस सभागार में यह वचार भी मेरे मन में आता है क **Assam Administrative Staff College** असम के लए **good governance** की दिशा में **change-agent** की भू मका निभाएगा। इससे राज्य सरकार की जन-कल्याण तथा वकासपरक गति व धयों को और अ धक शक्ति प्राप्त होगी।

यह पूरे देश के लए प्रसन्नता की बात है क आज असम की जनता प्रगति के नए अध्याय जोड़ रही है। मैं असम के सभी निवा सयों को उनके उज्ज्वल भ वष्य के लए शुभकामनाएं देती हूं।

धन्यवाद!

जय हिन्द!

जय भारत!